उनकी एक दृष्टि ने ही बदला जीवन

- ब्र.कु. संतोष,सायन,मुम्बई

हर एक के जीवन में भिन्न-भिन्न स्वभाव-संस्कार वाले व्यक्ति सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं और चले जाते हैं। परंतु कभी-कभी ऐसी दिव्य विभूतियाँ जीवन में आती हैं जो सदा के लिए अपनी अमिट छाप छोड़ जाती हैं। ऐसे ही सन् 1964 में मातेश्वरी जी हमारे जीवन में आयीं और सदा के लिए अपना बना गयीं।

उपरोक्त अनुभव सुनाते हुए मुम्बई, सायन से ब्रह्माकुमारी संतोष बहन कहती हैं कि पहली बार मैंने मम्मा को तब देखा जब वे मुम्बई में सेवा के लिए आई थीं। मम्मा की शीतल और गम्भीर मूर्त को देखते ही ऐसा अनुभव हुआ कि हम साक्षात सरस्वती देवी को देख रहे हैं। मेरा तो यही अनुभव रहा कि मम्मा की एक झलक ने हमारे जीवन के लक्ष्य को ही बदल दिया। ऐसा लगा कि बनना है तो मम्मा के समान बनना है, जीना है तो विश्व सेवा के लिए जीना है। मम्मा के चेहरे की पवित्रता की झलक ने इतना प्रभावित किया जो मैं सुध-बुध भूल गयी। मम्मा के मधुर बोल ने मुझे होश में लाया कि 'संतोष' सिर्फ नाम नहीं परंतु बहुत बड़ा गुण तथा खज़ाना है, जिसे आप परमात्मा द्वारा पा सकती हो। लौकिक माँ ने मेरे शरीर का नाम संतोष रखा परंतु अलौकिक माँ ने मुझ आत्मा को संतुष्टता का वरदान देकर संतुष्टमणि बना दिया।

परम त्यागी और परम तपस्विनी

मम्मा को देखने से ही तपस्या और त्याग की मूर्ति का अनुभव होता था। मम्मा तुरंत दान महापुण्य जमा करने वाली थीं। इसका मिसाल बृजइन्द्रा दादी ने हमें सुनाया था। एक बार हैदराबाद (सिन्ध) में एक ऑफिसर ब्रह्मा बाबा से मिलने आया था, क्योंकि लोगों के मन में गलत धारणायें थीं कि बाबा माताओं-कन्याओं का घर-बार छुड़ाते हैं, जादू करते हैं आदि आदि। तो बाबा उस ऑफिसर को समझा रहे थे कि देखो मैं इन बच्चियों को क्या देता हूँ? ना गहने देता श्रृंगार के लिए, ना अच्छे कपड़े देता हूँ। इनको गहने और कपड़ों से भी ऊँचा श्रृंगार ज्ञान-श्रृंगार मिलता है, जिससे इन्हें आत्मिक सुख मिलता है, जिस कारण ही ये भौतिक सुखों को त्याग कर आत्मिक सुख की ओर भागती हैं। यह वार्तालाप मम्मा और बृजइन्द्रा दादी ने बाहर बगीचे में टहलते हुए सुना। मम्मा, बृजइन्द्रा दादी को कहने लगीं कि देखो, बाबा हमारे लिए क्या कहता है। परंतु हमने तो अब तक ये विनाशी गहने पहने हुए हैं और बृजइन्द्रा दादी को तो बाबा ने लौकिक जीवन में बहुत श्रृंगारा था। मम्मा की यह बात सुनकर बृजइन्द्रा दादी ने कहा कि हमारे इन झूठे गहनों से बाबा के बोल झूठे लगेंगे क्योंकि हमने गहने पहने हैं और बाबा कहते हैं कि ये झूठा श्रृंगार छोड़ सच्चा श्रृंगार करती हैं। अब क्या किया जाये? तो मम्मा ने कहा, चलो हम दोनों ये झूठे गहने उतार देती हैं। तो उन दोनों ने तुरंत ही गहने उतार दिये। उन्हें देखकर सारे यज्ञ-वत्सों ने अपने सब गहनों का स्वयं ही त्याग कर दिया। मतलब यह है कि मम्मा सदैव बाबा के महावाक्यों को साकार करने में नम्बर वन रहीं।

सदा मन्दस्मिते

शिव बाबा हमेशा कहते थे कि बाबा नम्बर वन है, परंतु तुम्हारी माँ तो प्लस वन में गयी। मम्मा के चेहरे पर हमने कभी भी उदासी नहीं देखी, उनका सदैव मुस्कराता हुआ चेहरा था। मम्मा का एक-एक बोल सुख देने वाला था। मम्मा के दृढ़ता भरे बोल सदैव औरों को भी दृढ़ संकल्पधारी बनाते थे। मम्मा की दृष्टि पाते ही कइयों को अशरीरीपन का अनुभव होता था। मम्मा की शीतल गोद जन्म-जन्मान्तर के विकारों की तपत बुझाने वाली थी। अनोखा अनुभव होता था। मम्मा बाबा को फॉलो (अनुसरण) करने में नम्बर वन थीं इसलिए बाबा की सारी दिनचर्या सवेरे से लेकर रात तक कैसे चलती थी – उसको सुनकर फॉलो करती थीं।

मधुबन में मम्मा जब बाबा द्वारा मुरली सुनती थीं तो ऐसा महसूस होता था जैसे कि चातक पक्षी बरसात की एक-एक बूंद को मोती बनाने के लिए इंतज़ार कर रहा है। मम्मा, बाबा के एक-एक महावाक्य को सुनने के लिए तरसा करती थीं और ग्रहण कर उसे तुरंत जीवन में उतार कर ज्ञान का स्वरूप बन जाती थीं। मम्मा की याद आते ही यह आवाज़ दिल से निकलती है –

''जीवन अमर नहीं है प्यारे,
नाम अमर कर जाना।
जग में अनमोल बोल से,
सबका दिल बहलाना।''

मुझे मिली मेरी मम्मा

- ब्र.कु. उमा,धर्मशाला,हि.प्र.

वर्तमान समय दुनिया जगदम्बा को माँ कहकर पुकार रही है, रात भर जागरण कर उसकी प्रार्थना करती है, उस माँ को हमने इन स्थूल आँखों से देखा, जाना, पहचाना, वार्तालाप किया, दृष्टि ली और पालना पायी है। धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) की ब्रह्माकुमारी उमा बहन अपना अनुभव सुनाते हुए कहती हैं कि सन् 1964 में मम्मा से पहली बार मुलाकात हुई, उस समय मेरी आयु 18 वर्ष की थी। हम घर से ज्ञान सुनने के लिए सेंटर पर आते थे। पता चला कि 15 दिन के लिए मम्मा अमृतसर आ रही हैं। मम्मा से जब दृष्टि मिली तब लगा कि मुझ आत्मा के अंदर शक्ति का संचार हो रहा है। मन खुशी में झूमने लगा। मुझे एहसास हुआ कि बिछुड़ी हुई मेरी माँ मुझे मिल गयी। सच में, मम्मा जगत् की भी माँ थी, उनमें बेहद का प्यार, बेहद की दृष्टि थी। उस समय मम्मा ने मुझे बुलाकर कहा, बच्ची सेवा करोगी, तुम सेंटर पर रहोगी? मैं सेंटर पर रहना उस समय पसंद नहीं करती थी। घर से आना-जाना ही ठीक समझती थी, लेकिन मम्मा की इन बातों में इतनी रुहानियत, मिठास और प्यार था कि मैं ना नहीं कह सकी। मैंने कहा, जी मम्मा, आप जैसे कहेंगी वैसे ही करूंगी। उस दिन से मम्मा ने मुझे 15 दिन अपने साथ ही रखा। इन 15 दिनों में मैंने देखा कि मम्मा रोज़ अमृतवेले 2 बजे उठकर बाबा को याद करती थीं। उनके साथ रहकर मैं इस दुनिया को भूल गयी। मुझे खुशियों भरी ज़िन्दगी मिल गयी।

मधुरभाषी मम्मा

मम्मा की वाणी इतनी सरल, मधुर और कशिश वाली होती थी कि सुनकर हमारे विचार ही बदल गये, हमारा जीवन ही बदल गया, उन जैसा बनने की प्रेरणा मिली। मम्मा में परखने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति बहुत तेज़ थी। मम्मा ने हमें परख कर, प्यार देकर समर्पण करा दिया।

मैंने जब मम्मा को देखा तो मुझे दिखायी पड़ा जैसेकि मम्मा सफेद वस्त्रधारी अष्टभुजा वाली हैं। फिर रंगीन वस्त्रों में शेर पर सवार जगदम्बा का रूप दिखायी पड़ा।

फर्श नहीं अर्श निवासिनी

जब भी मम्मा को हम किसी भी समय देखते थे, मम्मा एक योगिनी की तरह ही दिखाई देती थी, जैसे कि देह में रहते भी देह से परे हों।

चलते-फिरते मम्मा हमसे पूछती थीं, ''बच्ची, बाबा को कितना याद करती हो? बाबा से कितना प्यार करती हो?'' इस प्रकार, ज्ञान की लोरी के साथ योग का भी ध्यान खिंचवाती थीं, मम्मा जब दृष्टि देती थीं तो उनकी आँखें इतनी चमकती थीं कि जैसे कि उन आँखों से बाबा देख रहा हो। मम्मा की दृष्टि से उनका सम्पूर्ण स्वरूप दिखायी पड़ता था। मम्मा ऐसे लगती थीं कि वे यहाँ की नहीं हैं, वे ऊपर से आयी हैं। वे देहधारी नहीं लगती थीं, सूक्ष्म शरीरधारी लगती थीं। उनकी दृष्टि में इतनी ताकत थी कि जिसको भी वे देखती थीं उसके विचार ही बदल जाते थे। मम्मा विद्यादायिनी सरस्वती होते हुए भी छोटे-छोटे बच्चों को भी बहुत रिगार्ड देती थीं। सरल अर्थात् निरहंकारी थीं। ऐसी थीं हमारी माँ जगदम्बा सरस्वती।

येवला-महा.। सुप्रसिद्ध मराठी टी.वी. हास्य कलाकार अरुण कदम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीता। साथ हैं ब्र.कु. अणु तथा कंचन सुधा एकेडमी के डायरेक्टर अजय जैन।

राजकोट-जागनाथ। आत्मन युवा ग्रुप के नव वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. भगवती को सम्मान पत्र देकर सम्मानित करते हुए स्मार्ट सिटी मिशन ट्रस्ट तथा फनट्रीट के प्रमुख जीतुभाई गोटेचा।

सांगली-महा.। मराठी फिल्म एक्टर सर्जेराव गायकवाड, सांगली जिला कलेक्टर शेखर गायकवाड तथा अन्य गणमान्य जनों द्वारा 'जीवन गौरव पुरस्कार' प्राप्त करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुनीता।